P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking
Vol-II * Issue- IX* February- 2016

भारत का स्वच्छता अभियानः कानपुर के ऐतिहासिक स्थलों की स्वच्छता एवं संरक्षण

ममता गंगवार
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्षा,
इतिहास विभाग,
महिला महाविद्यालय,
किदवई नगर, कानपुर

सारांश

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के स्वच्छ भारत अभियान के अर्न्तगत कानपुर के ऐतिहासिक स्थलों की स्वच्छता व संरक्षण सम्बन्धी समस्याओं और सुझाव के बारे में अपने विचार प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहीं हूँ।

मुख्य शब्द : स्वच्छता एवं संरक्षण।

प्रस्तावना

यह शोध–पत्र मैं अपने पुत्र इंजीनियर अंकुर सिंह को समर्पित करते हुये प्रस्तुत कर रही हूँ।

भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी ने अपनी सरकार बनते ही सरदार बल्लभ भाई पटेल, महात्मा गाँधी, जय प्रकाश नारायण, दीन दयाल उपाध्याय जैसे आदर्शो को सामने रखकर कार्य करने का निर्णय लिया और 15 अगस्त 2014 को लाल किले से उन्होंने सबसे बड़ा संदेश जो दिया उससे पूरे देश में शौचालय बनाने पर बल दिया और महिलाओं व बच्चियों के लिए अलग से शौचालय निर्माण की बात की। साथ ही उन्होंने महात्मा गाँधी के आदर्श को सामने रखकर भारत को गन्दगी मुक्त करने का अभियान शुरू करने की बात की।

2 अक्टूबर 2014 को प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने देशवासियों को शपथ दिलाई–"महात्मा गाँधी ने जिस भारत का सपना देखा था उसमें सिर्फ राजनैतिक आजादी ही नहीं थी बल्कि एक स्वच्छ एवं विकसित देश की कल्पना की थी। महात्मा गाँधी ने गुलामी की जंजीरों को तोड़कर माँ भारती को आजाद कराया। अब हमारा कत्तव्य है कि गन्दगी को दूर करके भारत माता की सेवा करें।[1] 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान का शुभारम्भ कर दिया जिसमें उन्हाने 2019 तक भारत को कचरा मुक्त भारत बनाने का संदेश दिया। इस कार्य को बड़ा रूप देने के लिए उन्होने सचिन तेन्दुलकर, अनिल अम्बानी सलमान खान, शशि थरूर सरीखे 9 लोगो को चयनित कर ऐसे ही 9 दल बनाने की बात की और उन्हाने स्वयं बाल्मीकि आश्रम में झाड़ू लगाकर अभियान शुरू किया और देखते–देखते उनके सभी मंत्री, केन्द्रीय कर्मचारी आदि सभी इस अभियान से जुड़ गये। झाड़ू चुनाव चिन्ह वाले आप पार्टी के प्रमुख अरविन्द केजरीवाल ने भी सफाई अभियान में भागीदारी की।[2] हम सभी लोगों ने झाड़ू लगाकर एवं गन्दगी हटाकर सफाई अभियान में अपना योगदान दिया गया उदाहरण के तौर पर कानपुर नगर की जिलाधिकारी डा0 रोशन जैकब ने भी झाड़ू लगाकर लोगो को स्वच्छता हेतु लोगो को प्रेरणा दी पर यह सब कितने दिन चल पाई कानपुर में तो लोग अभी भी रास्ते चलते कहीं भी पान, पानमसाला आदि खाकर थूकते आप देख सकते ह, जगह–जगह कचरा भी फला मिलेगा पर इस अभियान से पूर्व की स्थिति में तो सुधार आया है पर प्रत्येक नागरिक को प्रत्येक स्थल को अपना घर समझकर साफ रखने की नैतिक जिम्मेदारी समझनी चाहिए तभी स्वच्छ भारत अभियान सफल हो सकता है।

उददेश्य

प्रस्तुत शोध–पत्र के माध्यम से जनता एवं सरकार का ध्यान कानपुर के एतिहासिक स्थलों की स्वच्छता एवं संरक्षण हेतु आकर्षित करना चाहती हूँ, जिससे इन स्थलों को प्रसिद्ध पर्यटक स्थलों में जोड़ा जा सकता है।

"स्वच्छ भारत मिशन" को एक जन आन्दोलन बनाने की जरूरत पर जोर देते हुए शहरी विकास मंत्रालय ने एक आनलाइन प्लेटफार्म तैयार किया है ताकि सामूहिक तौर पर स्वच्छता सम्बन्धी गतिविधियों को स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर संचालित करने में नागरिकों का एक नेटवर्क विकसित हो सके। इस दिशा में यह मंत्रालय एक सामुदायिक सोशल प्लेटफार्म Local Circles की मदद से ले रहा है। स्वच्छ भारत नामक एक राष्ट्रीय नेटवर्क शुरू किया गया और इसमें 1,70,000 नागरिक जुड़ चुके ह।[3]

इस सोशल मीडिया प्लेटफार्म के माध्यम से नागरिक आसानी से एक साथ आकर स्वच्छता के बारे में अपने विचारों का आदान प्रदान करके अपने आसपास स्वच्छता सम्बन्धी समुचित गतिविधियां चला सकते हैं और सामूहिक प्रयासो से सम्बन्धित तस्वीरा को साझा करने के साथ–साथ निर्वाचित प्रतिनिधियों के साथ मिलकर स्वच्छता अभियान को आगे ले जा सकते है। "स्वच्छ भारत" नामक राष्ट्रीय नेटवर्क के बल पर इसके भागीदार इसे लागू करने की श्रेष्ठ परम्पराओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने में सक्षम होते ह। इसके अलावा, यह कचरा संग्रह करने और उसका निपटारा करने, नागरिक चेतना को बढ़ावा देने और आवश्यकतानुसार हस्तक्षेप करने जैसे मुद्दों पर नियमित रूप से कार्यान्वयन एजेंसियों को सुविचारित और सामूहिक विवरण उपलब्ध कराने में भी सक्षम बनाता है।[4]

केन्द्रीय ग्रामीण विकास, पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री श्री नितिन गडकरी ने कहाँ.....ग्रामीण भारत में जैव–उर्वरकों और विभिन्न तरह की ऊर्जा के रूप में कचरे को सम्पदा में तब्दील करने के लिए बड़े पैमाने पर तकनीक का इस्तेमाल किया जायेगा।.....प्रधानमंत्री के स्वच्छ भारत मिशन को युद्ध स्तर पर क्रियान्वित किया जायेगा। इसमें देश की हर ग्राम पंचायत, पंचायत समिति और जिला परिषद को शामिल किया जायेगा। इसके अलावा ग्रामीण आबादी के बड़े हिस्से, स्कूल, शिक्षकों और विद्यार्थियों को भी इस मुहिम में लगाया जायेगा। .....इस मुहिम में देश भर के सभी धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संगठनों से भी सहयोग करने को कहा जायेगा।[5]

गाँधी जी के स्वच्छता के सपने को साकार करने हेतु भारत को गन्दगी से मुक्ति दिलाने के लिय जल, वायु, ध्वनि प्रदूषण पर नियन्त्रण करना होगा। झाड़ के साथ–साथ सच्ची निष्ठा से काम करना भी स्वच्छ भारत के लिये चुनौती पूर्ण है। गन्दगी फैलाने वालो को रोकना होगा तथा दण्ड के स्वरूप को शामिल करना श्रेयस्कर सिद्ध होगा।

आवारा घूमने वाले पशुओं को रोकने की व्यवस्था होनी चाहिए क्याकि वे भी गन्दगी फैलाते है और शोर गुल पर भी नियन्त्रण लगना चाहिए। बैण्ड बाजा, डी0जे0 आदि आवश्यकतानुसार आवाज में चलने चाहिए। शादी ब्याह आदि में बजाये जाने वाले पटाखे ध्वनि के साथ वायु प्रदूषण भी करते है। सर्वोच्च न्यायालय का गंगा के सन्दर्भ में कहना है कि यही प्रयास रहा तो गंगा 200 साल में भी प्रदूषण मुक्त नही हो सकेगी। प्रधानमंत्री मोदी जी चाहे मेडिसिन स्क्वेयर अमेरिका में जाकर गंगा की सफाई की बात करें या जापान जाकर गंगा को साफ करने का सहयोग मागें हम गंगा को प्रदूषण मुक्त नहीं कर पायेंगें।[6]

जब जागरूकता तथा दण्ड प्रावधान होने तथा पालीथिन, गुटका, सिगरेट, पान आदि पर सार्वजनिक एवं विशेष स्थलों पर प्रयोग करने पाबन्दी लगनी चाहिए। स्वच्छता अभियान की ओर कदम बढ़ाना धीरे–धीरे सफलता की ओर अग्रसर हो सकता है।

स्वच्छ भारत अभियान के इसी क्रम में मै कानपुर के ऐतिहासिक स्थलों की स्वच्छता एवं संरक्षण पर चर्चा करना चाहती हूँ। उक्त विषय चर्चा के लिये कानपुर के ऐतिहासिक स्थलों का अध्ययन मै आवश्यक समझती हूँ। अतः मैने स्थलों का विवरण देकर अपनी बात कहने का प्रयास किया है जो निम्नवत है–

गंगा–यमुना के दो आब में स्थित कानपुर में पुरातात्विक महत्व खोंरा, घाटमपुर, मूसानगर आदि पुरास्थलों में खुदाई के दौरान ताम्रयुगीन आयुध के रूप में कांटेदार बरछी, गोल छल्ला, कुल्हाड़ी, खड्ग, भाला, टेराकोटा की सामग्री, बर्तन, सिक्के आदि प्राप्त हुये है। शिवराजपुर से प्राप्त ताबें की तीन मानव आकृतियां काफी महत्वपूर्ण हैं, जो कि लखनऊ एवं दिल्ली के राजकीय संग्रहालयों में संरक्षित है। यही ताम्रयुगीन मानव आकृति उत्तर प्रदेश के पुरातत्व विभाग का लोगों है।

कानपुर को प्राचीन कान्हपुर का और वह गंगा जी के किनारे जिसे आजकल पुराना कानपुर कहते हैं एक छोटा सा गाँव था। तारीखे शेरशाही में कानपुर का नाम पहली बार आया था। कान्हपुर के बसाने वाले के रूप में संचेडी के राजा हिन्दू सिंह का ही नाम प्रसिद्ध रहा है।

कानपुर जिले में ऐतिहासिक काल का सबसे प्राचीन स्थान जाजमऊ है। जनश्रुति है कि यह राजा ययाति की राजधानी थी और उन्हीं के नाम से ययातिमऊ कहलाया जिसका कालान्तर में अपभ्रंश होते–होते जाजमऊ हो गया। अल्वरूणी ने अपने ग्रंथ किताबुल हिन्द में जाजमऊ का उल्लेख किया है। उस समय के कन्नौज से प्रयाग जाने के मार्ग में जाजमऊ एक प्रसिद्ध स्थान था। जाजमऊ का दूसरा नाम सिद्धपुर भी है और सिद्धनाथ मन्दिर व सिद्धा देवी मन्दिर जाजमऊ के पूर्व गंगा तट पर बने हुये है।[7]

प्राचीनकाल में ब्रह्मवर्त नाम से विख्यात बिठूर महर्षि बाल्मीकि की तपो भूमि रही है। बिठूर का कस्बा कानपुर नगर से 14 मील दूर गंगा जी के तट पर 26^0–37^0 अक्षांश तथा 80^0–16^0 अक्षांश देशान्तर रेखाओं पर स्थित है। किवदंती है कि ब्रह्मा ने सृष्टि रचना के उपलक्ष में यहाँ ब्रह्ममेश्वर महादेव की स्थापना की तथा एक अश्वमेघ यज्ञ किया था, उसके स्मारक स्वरूप एक नाल स्थापित की थी इसे ब्रह्मनाल या ब्रह्म की खूँटी कहते है। पौराणिक कथानुसार तपस्वी बालक ध्रुव और उनके पिता उत्तानपाद की राजधानी भी यही थी। ध्रुवटीला राजधानी का स्थान बताया जाता हैं सीता परित्याग के समय लक्ष्मण सीता जी को बाल्मीकि आश्रम में छोड़ गये थे यहाँ लवकुश का जन्म तथा भगवान राम की सेना से लवकुश का युद्ध हुआ था।[8]

अतः बिठूर के दर्शनीय स्थलों में प्रमुख है– बह्मा की खूँटी, ध्रुव टीला, बाल्मीकि आश्रम, दीप मालिका स्तम्भ, लव–कुश आश्रम, अलमास अली मकबरा, ब्रह्मावर्त घाट, पत्थर–घाट, अष्टतीर्थ, प्राचीन गणेश मन्दिर आदि।

भोगनीपुर तहसील में मुगलरोड पर पुखरायां व घाटमपुर के बीच मूसानगर कस्बा है जहाँ राजा बलि (परमभागवत असुरराज प्रहलाद के पौत्र व वाणासुर के पिता) ने मुक्तादेवी का प्राचीन मन्दिर बनवाया था। मूसानगर अतीत काल में राजा बलि की राजधानी या उनके गुरू शुक्राचार्य का आश्रम थी।[9]

कानपुर से पश्चिम में बसे सैबसू गाँव के पास गंगा के किनारें श्रृंगी ऋषि का आश्रम है। श्रंगि ऋषि कश्यप ऋषि के पुत्र विभाजक के पुत्र थे।[10]

कानपुर की तहसील भोगनीपुर में निगोही ग्राम के पास डेरापुर से 8 मील दूर सेंगुर नदी के किनारे उग्र

तपस्वी क्रोधमूर्ति अत्रि मुनि के पुत्र दुर्वासा ऋषि का आश्रम है।[11]

डेरापुर तहसील से वीनपारा एक कस्बा है जो रावण के प्रति द्वन्दी महान बली वाणासुर की राजधानी था। यहाँ वाणेश्वर महादेव का मेला भी शिवरात्रि के अवसर पर लगता हैं यह मूर्ति बलि–पुत्र वाणासुर ने स्थापित की थी।[12]

पनकी में स्थित प्राचीन हनुमान मन्दिर है वही पास में ही एक अति प्राचीन कछुआ तालाब हैं जिसकी जानकारी किवदंतियों द्वारा होती है। उस तालाब की चारदीवारी लकोरिया ईंट से बनी हुई थी और पानी स्त्रोत पाताल से थे। किसी को पता ही नहीं था कि पानी कहाँ से आता है अब तो चारो तरफ बस्ती हो जाने, घरों, भवनों के बनने से यह तालाब प्रभावित हुआ होगा।

घाटमपुर तहसील के अर्न्तगत भीतर गाँव स्थित गुप्तकालीन प्राचीन मन्दिर, बेहटा का प्राचीन मन्दिर, घाटमपुर कस्बे में कड़हा देवी का मन्दिर, पतारा का शिवालय, घाटमपुर से हमीरपुर रोड पर स्थित वीरेश्वर महादेव का मंदिर आदि हमारी प्राचीन ऐतिहासिक पुरातात्विक धरोहर है।[13]

21 जनवरी 2007 के दैनिक जागरण में दिया है "कौन सुनेगा असुरक्षित स्मारकों का दर्द" जिसे मै यहाँ देना चाहती हूँ" ऐतिहासिक महत्व वाले भवनों का कानपुर में कोई पुरसाहाल नहीं है। बेहद जर्जर अवस्था में ये भवन अपनी बेबसी पर आँसू बहा रहे है। अब तो इस कदर बदहाली हो गई हैं आर इनके रखरखाव के लिये न सरकार चिंतित है और न ही वे संगठन जो ऐतिहासिक धरोहरो के रखरखाव में काम करने की डीगें मारते है। इण्डियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट कल्चर हेरिटेज की रिपोर्ट के अनुसार कानपुर में ही 79 स्मारक ऐसे है। जो पूरी तरह असुरक्षित है। इनमे ऐतिहासिक महत्व के प्रमुख घाट भी शामिल है। इनमें कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित विशाल तालाब भी शामिल हैं कब्रिस्तान के निकट सूबेदार तालाब भी ऐतिहासिक धरोहर हैं इन असुरक्षित स्मारकों के रख रखाव के लिये प्रदेश व केन्द्र सरकार स्तर पर प्रयास जारी है। नाना साहब पशवा का बिठूर स्थित महल खण्डहर की शक्ल अख्तियार कर चुका है। हालाकि बिठूर में ही नाना साहब पार्क का जीर्णोद्धार हो रहा है। इसके अतिरिक्त पाँच करोड़ की लागत से बिठूर में और भी काय किये जा रहे है पर महल के संरक्षण का कोई कार्य नही हुआ। इसके अलावा सत्तीचौरा घाट भी खण्डहर होता जा रहा है। यही वह जगह है जिसे मैस्कर घाट कहते हैं और 1857 में गंगा का जल फिरंगियों के खून से लाल हो गया था। पुरातत्व विभाग को इसका संरक्षण भी करना चाहिए। छावनी क्षेत्र का ऑल सोल्स चर्च हर आदमी देखने नही जा सकता। बैराज निर्माण के बाद गंगा घाटों तक जरूर आ गई हैं पर ऐतिहासिक घाट आज भी जर्जर और वीरान पड़े हैं पुराने ढाँचे की ईंटे तक गायब होती जा रही हैं। बिठूर में भी ट्रस्ट ने 29 ऐसे ऐतिहासिक स्थल चयनित किये है जो मिटने के कगार पर है। इण्डियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट कल्चर हेरिटेज से जुड़े एस0 पी0 मेटरा सवाल उठाते है कि कचहरी स्थित गोरा कब्रिस्तान के रखरखाव पर लाखो रूपया खर्च किया जाता है। जबकि कोई अंग्रेज कब्रों को देखने तक नहीं आता है और 1857 के स्मारकों का कोई पुरसाहाल नहीं है। हीरामन का पुरवा, सूबेदार तालाब आदि तो लुप्त ही हो गये है। अपर इण्डिया चैम्बर आफ कॉमर्स बिल्डिंग तोड़ बहुमंजली इमारत खड़ी कर दी गई है। सदर लैण्ड को हथौड़ा मार–मार कर तोड़ दिया गया है इस तरह कहाँ रह जायेगे ऐतिहासिक महत्व के भवन और स्वतन्त्रता संग्राम के प्रतीक चिन्ह।[14]

जनरल ह्वीलर द्वारा बनाये गये किले के भीतर मैमोरियल क्रास, सिविल एरोड्रम समीप स्थित सवादा कोही का स्मारक, सत्तीचौरा घाट पर बना स्मारक बीबीघर (नानाराव पार्क या तात्या टोपे मेमोरियल गार्डन में तरणताल के आसपास का स्थान), मेमोरियल वेल गार्डेन (नानाराव पार्क) जिसमें प्रथम स्वतंत्रता संग्राम दिवस से 90 साल बाद भारतीयों को प्रवेश की आजादी मिला, इस गार्डेन को बनाने के लिये कानपुर वासियों पर जुर्माना लगाया गया था, भारतीयों के प्रवेश पर रोक थो, गार्डेन में प्रवेश हेतु दो आना शुल्क था, कांग्रेस के अधिवेशन के दौरान जनपतिनिधियों/कार्यकताओं द्वारा गार्डेन म जबरदस्ती प्रवेश किया गया था।[15] फूलबाग के मैदान के पूर्वी भाग में एक भव्य पुराना भवन है जिसे अपने मूल नाम के0 ई0 एम0 हाल (किंग एडवर्ड मेमोरियल हाल) के नाम से जाना जाता है। यद्यपि इसका नाम परिवर्तित करके गणेश भवन (हतात्मा गणेश शंकर विद्यार्थी की स्मृति मे), गाँधी भवन (महात्मा गॉधी जन्म शताब्दी वर्ष म) रखे गये जो जनसामान्य में प्रचलित न हो सके। फूलबाग का वर्तमान नाम गणेश उद्यान अवश्य ही चलन में है।[16]

कानपुर की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक धरोहर को बनाये रखना हम सभी का उत्तर दायित्व है जिससे कि भविष्य में आगामी पीढ़ी उसे देख सके, समझ सके और हो सके तो कुछ सीख ले सकें तथा हमारी संस्कृति जीवित रह सके। इन धरोहरो को सुरक्षित व संरक्षित रखने के साथ–साथ स्वच्छता भी अति आवश्यक पहलू है जिससे उक्त स्थलों का महत्व जो प्राचीन काल मध्यकाल, आधुनिक काल में था वह वर्तमान में तथा भविष्य में भी बना रहे। जिसके लिए मै कुछ सुझाव देना चाहती हूँ जो अग्रलिखित है।

1. किसी भी स्थान की स्वच्छता केवल झाड़ू लगाकर नही बनायी रखी जा सकती है वरन् उसके लिये प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सोच बदलनी होगी जिससे कि कूड़ा–कचरा और गन्दगी फैलने ही न पाये। स्थान–स्थान पर कूड़े–कचरे को एकत्र करने हेतु व्यवस्था कूड़ेदान आदि जगह–जगह हों और प्रतिदिन पूरी तरह से सफाई अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्याकि एकत्रित कचरा सड़ा करता है तथा स्वास्थ्य पर गम्भीर प्रथाव डालता है तथा व्यवस्था होने के बावजूद यदि कोई अनर्गल कूड़ा फैलाता है या गन्दगी करता है तो पाश्चात्य देशो के समान ही दण्डात्मक व्यवस्था भी लागू होनी चाहिए।
2. पर्यावरण को गंदगी व प्रदूषण से मुक्त स्वच्छ रखने के लिये नैतिकता एवं सोच में परिवर्तन अति आवश्यक है अपने घर के समान ही प्रत्येक स्थान का ध्यान रखने से हमारी धरोहर को सुरक्षित व संरक्षित बनाये रखा जा सकता है।
3. कचरे करे प्लान्टो में उर्जा कार्य के लिये उपयोगी बनाने की आवश्यकता है जिससे कि इकट्ठे किये

गये कचड़े को समाप्त किया जा सके और उसका उपयोग भी किया जा सके तथा गन्दगी फैलने से रोकी जा सके।

4. पानी की निकासी की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए जिससे रूके हुये पाने से होने वाली हानियों से बचा जा सके और उन्हे उचित स्थान (जैसे गंगा जैसी पवित्र नदियों को दूषित न कर सकें) पर निकासी की व्यवस्था होनी चाहिए। उस पानी का वैज्ञानिक तौर तरीकों से उपयोग भी किया जा सके। आपकी अदालत में 02.01.2016 को श्री नितिन गडकरी द्वारा बताया गया कि इसी तरह के उपयोग के लिए महाराष्ट्र के नाला नालियों के गन्दे पानी को करोड़ों रूपयें में उनक द्वारा बेंचा गया है।
5. यदि सम्भव हो तो इन पर्यटक स्थलों पर या आस–पास कुछ दूरी पर शौचालयों की व्यवस्था भी सरकार द्वारा करवानी आवश्यक प्रतीत हो रही हैं। शौचालयों का अभाव होना भी गन्दगी का कारण हो सकता है।
6. स्वस्थ और स्वच्छ वातावरण बनाने हेतु इन स्थलों पर लाभदायी पेड़ भी लगाने चाहिए जो उन स्थलो की सुन्दरता के साथ–साथ पर्यावरण को भी शुद्ध रखने में उपयोगी एवं सहायक होंगे।
7. इन पर्यटक स्थलों का संरक्षण जीर्णोद्धार एवं स्वच्छता एक महत्वपूर्ण चुनौती है जो न तो केवल सरकार के अन्य विभागा एवं पुरातत्व विभाग द्वारा पूर्ण की जा सकती है वरन् उक्त स्मारकों, स्थलों के आसपास रहने वाले लोगो की भी नैतिक जिम्मेदारी है कि वह सहयोगपूर्ण रवैया अपनाये तथा चुनौती का सामना करें।
8. जाजमऊ का टीला एक तरफ से धसक गया अभी कुछ दिन पहले (दिसम्बर 2015 के अन्तिम सप्ताह में) ही समाचार पत्रों द्वारा विदित हुआ पर यह अच्छा हुआ कि वहाँ रहने वाले लोगों को पूर्व में ही यह सम्भावित सूचना दी गई थी जिससे उन्होने इसे खाली कर दिया और लोगों के साथ हादसा होने से बच गया हो सकता है अधिक दबाव के कारण या लोगो, द्वारा पानी को निकासी की समुचित व्यवस्था न करने के कारण ऐसा हुआ हो कारण कुछ भी रहा हो पर टीला ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योकि गंगा पुल बनाने के लिये टीले की खुदाई कुछ वर्ष पूर्व में पुरातत्व विभाग द्वारा करवाई गई थी जिसमें मिली वस्तुओ के आधार पर ययाति राजा के समय की संस्कृति का परिचय मिला हो सकता है कि इसमें और राजाओ के समय की संस्कृतियाँ भी छिपी हों क्योकि प्राचीन काल में नदियों के किनारे ही बस्तियां अर्थात् राज्य आदि बसाये तथा बनाये जाते थे।

निष्कर्ष

कानपुर के विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों में न जाने कितने कानपुर के ऐतिहासिक स्थल हैं जिनकी जानकारी हम कानपुर वासियों को ही नही है। इन स्थलों के बारे में समय–समय पर लागो को जानकारी दी जाने की आवश्यकता है। इन स्थलों को स्वच्छतापूर्ण रखना अति आवश्यक ह। इनमें संरक्षण प्रदान कर प्रचार–प्रसार करने से तथा पर्यटक स्थल के रूप में विकसित तथा इन्हे करने से क्षेत्रीय लोगों के रोजगार पर प्रभाव पड़ेगा और राज्य के संरक्षण में रहने से राज्य की आय पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। स्वच्छ वातावरण मनुष्य को स्वस्थ रखने में मददगार होता है। इन स्थलों पर मार्ग, नालियां, व्यवस्थित किये जाने की तथा समय–समय पर मेन्टीनेन्स की आवश्यकता है। जिससे कि इन्हे मनमोहक बनाया जा सके और लोग इन दार्शनिक स्थलों की ओर आकर्षित होकर खिंचे चले आयें और यह पर्यटक स्थलों के रूप में प्रसिद्ध हो सके तथा स्वच्छ व स्वस्थ भारत का हिस्सा बन सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मासिक पत्रिका कुरूक्षेत्र–दिसम्बर 2014, पृष्ठ–20 प्रका0–प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, नई दिल्ली।
2. कुरूक्षेत्र–पूर्वोक्त–पृष्ठ–21,22।
3. कुरूक्षेत्र–नवम्बर–2014, पृ0 26।
4. पूर्वोक्त–पृष्ठ–26।
5. पूर्वोक्त–पृष्ठ–26।
6. कुरूक्षेत्र दिसम्बर 2014, पृष्ठ 24।
7. कानपुर नगर परिक्रमा–पृष्ठ–1, सूचना एव जन सम्पर्क विभाग कानपुर, 2004।
8. पूवोक्त–पृष्ठ 02।
9. त्रिपाठी, श्री लक्ष्मीकान्त एवं अरोड़ा, श्री नारायण प्रसाद कानपुर का इतिहास–भाग–1, पृष्ठ–32, कानपुर इतिहास समिति, कानपुर, 2003।
10. पूर्वोक्त–पृष्ठ–32।
11. पूर्वोक्त–पृष्ठ–33।
12. पूर्वोक्त–पृष्ठ 34।
13. कानपुर नगर परिक्रमा (पत्रिका) पृष्ठ–46, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, कानपुर–2004।
14. दैनिक जागरण–कानपुर–पृष्ठ 8, 21जनवरी 2007।
15. दि मॉरल (हिन्दी साप्ताहिक) रजत जयंती विशिष्ट अंक (1979–2004)।
16. पूर्वोक्त– पृष्ठ–29।